नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विवि में समुदाय के अधिकारों पर परिचर्चा आयोजित

वर्धा, 19 सितंबर 2018: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाजकार्य अध्ययन केंद्र में शोध वार्ता के तहत समुदाय एवं उनके अधिकार, धारा 377 के विशेष संदर्भ में विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में ट्रांसजेंडर वेलफ़ेयर बोर्ड, छत्तीसगढ़ की सदस्य एवं ट्रांसजेंडर समुदाय की बेहतरी के लिए कार्यरत मितवा समिति की अध्यक्ष रवीना वरिहा मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित थी। वक्ता के रूप में सारथी ट्रस्ट, के निदेशक आनंद चंद्रानी उपस्थित थी।

मुख्य वक्ता रवीना ने समुदाय में समलैंगिकता, ट्रांसजेंडर, बायसेक्सुअल के विभिन्न पहलुओं पर

विस्तारपूर्वक अपनी बात रखी। इनके प्रति समाज में ढेर सारे मिथक गढ़े गए हैं, उन मिथकों से उन्होंने लोगों को रू-ब-रू कराया तथा उसके पीछे के पहलुओं पर बात की। साथ ही धारा 377 से समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय के साथ-साथ हेट्रोसेक्सुअल लोगों के भी अधिकारों का किस प्रकार हनन करता रहा है, इस पर भी उन्होंने ध्यान आकर्षित किया।

उन्होंने कहा कि जब हम अर्धनारीश्वर के स्वरूप को पूजते हैं फिर तृतीय पंथ को समाज में स्वीकार करने में समस्या क्यों है। उन्होंने समाज से यह प्रश्न किया कि नेपाल में एक बच्चा पैदा होता है जिसकी नाक लंबी है तो समाज उसे आखिर क्यों मारना चाहता है? नीग्रो परिवार में पैदा हुए एक गोरे बच्चे को वह समाज क्यों नहीं स्वीकार करता है? सिर्फ इसलिए कि उस समुदाय के लोग काले हैं पर उस बच्चे का रंग उन समुदाय के लोगों से अलग है। उन्होंने यह प्रश्न किया कि क्यों हमारा समाज एकांगी संकीर्ण मानसिकता तक ही सीमित है? समाज आखिर अपने सीमित ज्ञान के दायरे से बाहर क्यों नहीं निकलना चाहता?

आगे उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हम सुबह और रात के बीच में आने वाले वक्त शाम को नहीं नकार सकते। एक बिंदु से दूसरे बिंदु को मिलाने वाली रेखा को नहीं नकार सकते हैं, उसी प्रकार स्त्री और पुरुष के अलावा एक और जेंडर है-ट्रांसजेंडर जिसे हम नहीं नकार सकते।

चंद्रानी ने समलैंगिकता के विभिन्न पक्षों और उनके सेक्सुअल रुझानों पर बहुत ही बारीकी से खुलासा किया। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए शंकर ने समलैंगिकों के जीवन के सबसे कड़वे अनुभवों को साझा किया।

साथ ही कैसे बचपन में उनके या उनके जैसे बच्चों के साथ सेक्सुअल एब्यूज होता है, इसकी विस्तृत चर्चा की।

केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि समाज को अपना नजरिया बदलना पड़ेगा। खासकर समाज कार्य के विद्यार्थियों और शोधार्थियों को, समाज की हर तरह कि विभिन्नताओं के बीच काम करने के लिए अपने आपको तैयार करना होगा। उन्होंने कहा कि हासिये पर के समूहों के अधिकारों के लिए सामाजिक क्रिया को भी बढ़ावा देना होगा, ताकि लोग नए परिवर्तनों को स्वीकार कर सकें।

संचालन के पीएचडी शोधार्थी डिसेंट साहु ने किया एवं आभार ज्ञापन शोधार्थी नरेश गौतम ने किया। इस आयोजन में विभाग के शिक्षक गजानन निलामे, एमफिल शोधार्थी चंदन सरोज, प्रेरित मोहन, राजन, शिवानी अग्रवाल, खुशबु साहु, औरंगजेब खान, सुधीर कुमार , तुषार सुर्यवंशी, प्रीति माला, गौरव एवं विश्वविद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र राजेश सारथी, विद्यार्थी चैताली, दीपक भास्कर, पुष्पेन्द्र तथा विभाग के कर्मी

दिलीप वाकड़े,सचिन नाखले आदि ने अपना सहयोग दिया।